७. मातृभूमि का मान

– हरिकृष्ण 'प्रेमी'

पठनीय

पाठ्यपुस्तक से 'भारत के संविधान' की उद्देशिका पढ़कर उसपर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- उद्देशिका में आए मूल्य बताने के लिए कहें । • इन मूल्यों पर चर्चा करवाए ।
- उद्देशिका में आए मौलिक अधिकारों के बारे में बताएँ ।

पात्र परिचय

राव हेमू	:	बूँदी के शासक
अभय सिंह	:	मेवाड़ के सेनापति
महाराणा लाखा	:	मेवाड़ के शासक
वीर सिंह	:	मेवाड़ की सेना का एक सिपाही जो बूँदी का रहने वाला था ।

चारणी तथा वीर सिंह के साथी

पहला दृश्य

(राव हेमू मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बात कर रहे हैं ।)

अभयसिंह : महाराव, सिसोदिया वंश हाड़ाओं को आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है ।

राव हेमू : तो फिर आप बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने की आज्ञा लेकर क्यों आए हैं ?

अभयसिंह : महाराज, हम राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति विदेशियों का किस प्रकार सामना कर सकती है? इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि हम अपनी शक्ति एक केंद्र के अधीन रखें ।

राव हेमू : और वह केंद्र है-चित्तौड़ ।

अभयसिंह : महाराज, आज राजपूतों को एक सूत्र में गूँथे जाने की बड़ी आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा ।

राव हेमू : ताकत की बात छोड़ो, अभयसिंह ! प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज है ।

अभयसिंह : किंतु अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।

राव हेमू : प्रेम का अनुशासन मानने को हाड़ा वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं । बूँदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है । अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता ।

अभयसिंह : तो मैं जाऊँ ।

परिचय

जन्म : १९०८ गुना, ग्वालियर (म.प्र.)
मृत्यु : १९७४
परिचय : हरिकृष्ण 'प्रेमी' जी पत्रकार के साथ-साथ कवि और नाटककार भी थे। आपके ऐतिहासिक नाटकों में प्रेम और राष्ट्रीय भावनाओं की रसात्मक प्रस्तुति हुई है।
प्रमुख कृतियाँ : अग्निगान, प्रतिभा, आँखों में, आदि (कविता संग्रह), रक्षाबंधन, प्रतिशोध, आहुति आदि (ऐतिहासिक नाटक), बंधन, छाया, ममता आदि (सामाजिक नाटक), मंदिर, बादलों के पार (एकांकी संग्रह), सोहनी-महीवाल, दुल्ला भट्टी, देवदासी, मीराँबाई (संगीत रूपक)

गद्य संबंधी

एकांकी : एकांकी का आकार छोटा होता है । इसमें एक ही कथा होती है । इसमें आदि से अंत तक संवादों की रोचकता बनी रहती है ।

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से 'प्रेमी' जी ने स्वाभिमान, एकता को बनाए रखने एवं मातृभूमि के लिए बलिदान देने के लिए प्रेरित किया है ।

राव हेमू : आपकी इच्छा । **(दोनों का दो तरफ प्रस्थान)**

पट परिवर्तन **दूसरा दृश्य**

(स्थान–चित्तौड़ का राजमहल । महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में टहल रहे हैं ।)

लाखा : इस बार मुट्ठी भर हाड़ाओं ने हम लोगों को जिस प्रकार पराजित और विफल किया, उसमें मेवाड़ के आत्मगौरव को कितनी ठेस पहुँची है, यह मेरा हृदय जानता है ।

(अभयसिंह का प्रवेश और महाराणा को अभिवादन करना)

अभयसिंह : महाराणा जी, दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

महाराणा : सेनापति अभयसिंह जी, आज मैं दरबार में नही जाऊँगा । आप जानते हैं कि जब से हमें नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा, मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है ।

अभयसिंह : हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण कर दिया । आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। इसमें आपका क्या अपराध है और इसमें मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कौन–सा कारण है ?

महाराणा : जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवित रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है । सुनो अभयसिंह जी, मैं अपने मस्तक के इस कलंक के टीके को धो डालना चाहता हूँ ।

अभयसिंह : मेवाड़ के सैनिक आपकी आज्ञा पर अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत हैं ।

महाराणा : उनके पौरुष की परीक्षा का दिन आ पहुँचा है । महारावल बाप्पा का वंशज मैं, 'लाखा', प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक बूँदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न–जल ग्रहण नहीं करूँगा ।

अभयसिंह : महाराणा ! छोटे–से बूँदी दुर्ग को विजय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? अंतिम विजय हमारी ही होगी किंतु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लग जाएँगे इसलिए ऐसी भीषण प्रतिज्ञा आप न करें।

महाराणा : आप क्या कहते हैं, सेनापति ? मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूँ और इस बात की हाल के युद्ध में पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति वीरता में हम लोगों से किसी प्रकार हीन नहीं है, फिर भी महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा वास्तव में प्रतिज्ञा है– वह पूर्ण होनी ही चाहिए । **(नेपथ्य में गान)**

ये सागर से रत्न निकाले । युग–युग से हैं गए सँभाले ।
इनसे दुनिया में उजियाला । तोड़ मोतियों की मत माला ।

किसी ऐतिहासिक घटना पर संवाद लिखिए तथा कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

ये छाती में छेद कराकर, एक हुए हैं हृदय मिलाकर ।
इनमें व्यर्थ भेद क्यों डाला ? तोड़ मोतियों की मत माला ।

(गाते–गाते चारणी का प्रवेश)

महाराणा : तुम कुछ गा रही थी चारणी ? तुम संपूर्ण राजस्थान को एकता की शृंखला में बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने का आदेश दे रही थी किंतु मैं तो उस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ । दो जातियों में दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ ।

चारणी : यह आप क्या कहते हैं महाराणा ? मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि आप हाड़ा शक्ति और साधनों में मेवाड़ से उन्नत हैं फिर भी वे वीर हैं । मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं । यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें ।

महाराणा : चारणी, तुम बहुत देर से आई !

अभयसिंह : चारणी, महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक वे बूँदी के गढ़ को जीत न लें, अन्न–जल ग्रहण न करेंगे ।

चारणी : दुर्भाग्य ! **(कुछ सोचकर)** महाराणा, मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। देश का कोई शुभचिंतक इस विद्वेष की आग को फैलने देना पसंद नहीं कर सकता ।

अभयसिंह : किंतु महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए ।

चारणी : उसका एक ही उपाय है । वह यह कि यहीं पर बूँदी का एक नकली दुर्ग बनाया जाए । महाराणा उसका विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें । महाराणा, क्या आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है ?

महाराणा : अच्छा, अभी तो मैं नकली दुर्ग बनाकर उसका विध्वंस करके अपने व्रत का पालन करूँगा किंतु हाड़ाओं को उनकी उद्दंडता का दंड दिए बिना मेरे मन को संतोष न होगा । सेनापति, नकली दुर्ग बनवाने की व्यवस्था करें ।

(सबका प्रस्थान)

पट परिवर्तन **तीसरा दृश्य**

(चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश, नकली दुर्ग का मुख्य दरवाजा महाराणा लाखा और सेनापति अभयसिंह का प्रवेश।)

अभयसिंह : आपने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया ? ठीक बन गया है न ?

महाराणा : निसंदेह यह ठीक बूँदी दुर्ग की हू–ब–हू नकल है । अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा । उसके बाद फिर ठंडे दिमाग से

श्रवणीय

महाराणा प्रताप के जीवन की सुनी हुई कोई प्रेरणादायी कहानी कक्षा में सुनाइए।

विषय से...

राष्ट्र का गौरव बनाए रखने के लिए पूर्व प्रधानमंत्रियों द्वारा किए सराहनीय कार्यों की सूची बनाइए ।

नौवीं कक्षा पाठ–२ इतिहास और राजनीति शास्त्र

सोचना होगा कि बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए किस तरह बाध्य किया जाए ।

अभयसिंह : शीघ्र ही बूँदी के पठारों पर सिसोदिया का सिंहनाद होगा। अच्छा, अब हम लोग आज के रण की तैयारी करें ।

महाराणा : किंतु यह रण होगा किससे ? इस दुर्ग में कोई तो हमारा प्रतिरोध करने वाला चाहिए ।

अभयसिंह : मैंने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएँगे जो बंदूकों से हम लोगों पर छूँछे वार करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा और फिर यह मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में मिला दिया जाएगा । अच्छा, अब हम चलें ।

(दोनों का प्रस्थान । वीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश)

वीरसिंह : मेरे बहादुर साथियों ! तुम देख रहे हो कि हमारे सामने यह कौन-सी इमारत बनाई गई है ?

पहला साथी: हाँ सरदार, यह हमारी जन्मभूमि बूँदी का दुर्ग है ।

वीरसिंह : और तुम जानते हो कि महाराणा इस गढ़ को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं किंतु क्या हम लोग अपनी मातृभूमि का अपमान होने देंगे ? क्या इसे मिट्टी में मिलने देंगे ?

दूसरा साथी: किंतु यह तो नकली बूँदी है ।

वीरसिंह : धिक्कार है तुम्हें ! नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है । आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा ।

तीसरा साथी: लेकिन सरदार, हम लोग महाराणा के नौकर हैं । क्या महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है ? हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है । हमें उनकी इच्छा में व्याघात नहीं पहुँचाना चाहिए ।

वीरसिंह : और जिस जन्मभूमि की धूल में हम खेलकर बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है ? जब कभी मेवाड़ की स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ है, हमारी तलवार ने उनके नमक का बदला दिया है, लेकिन जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा, हम मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर से प्राणों की बलि देंगे । आज ऐसा ही अवसर आ पड़ा है ।

पहला साथी: निश्चय ही कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता । जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है ।

'मातृभूमि प्रेम' इस एकांकी की मूल संवेदना है। अपने अनुभव के आधार पर ऐसे किसी प्रसंग से जुड़ी रोचक घटना को लिखिए।

वीरसिंह : मेरे वीरो ! प्रतिज्ञा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राज्य-पताका को स्थापित न होने देंगे ।

सब लोग : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेवाड़ का ध्वज फहराने नहीं देंगे ।

वीरसिंह : मुझे आप लोगों पर अभिमान है और बूँदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती । जिस बूँदी में ऐसे मान के धनी पैदा होते हैं उस पर संसार आशीर्वाद के साथ फूल बरसा रहा है । चलो, हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें ।

पट परिवर्तन **चौथा दृश्य**

(स्थानः बूँदी के नकली दुर्ग का बंद द्वार । महाराणा लाखा और अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : सूर्य डूबने को आया । यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी सेना बूँदी के नकली दुर्ग पर अपना झंडा स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी । वीरसिंह और उसके मुट्ठी भर साथी अभी तक वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं ।

अभयसिंह : हाँ महाराणा, हम तो समझते थे कि घड़ी-दो-घड़ी में खेल खत्म हो जाएगा,लेकिन हमें छूँछे वारों का मुकाबला करने के बजाय अचूक निशानों का सामना करना पड़ा ।

महाराणा : यह भी अच्छा ही हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता आ गई । यदि हमें बिना कुछ पराक्रम दिखाए ही दुर्ग पर अपना झंडा फहराने का अवसर मिल जाता तो मुझे जरा भी संतोष न होता और सच पूछो तो मुझे वीरसिंह की वीरता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । मैं चाहता था कि ऐसे वीर के प्राणों की किसी प्रकार रक्षा हो पाती ।

अभयसिंह : कुछ क्षणों के लिए सफेद झंडा फहराकर मैंने युद्ध रोक दिया था। उसके पश्चात मैं स्वयं दुर्ग में गया और वीरसिंह की उसके साहस के लिए प्रशंसा की । साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम इस व्यर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने हाड़ाओं को चुनौती दी है । हम उस चुनौती का उत्तर देने को मजबूर हैं । महाराणा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं तो खुशी से ले लें लेकिन हम इतने कायर और निष्प्राण नहीं है कि अपनी आँखों से बूँदी का अपमान होते देखें। मेवाड़ में जब तक एक भी हाड़ा है, नकली बूँदी पर भी बूँदी की ही पताका फहराएगी ।

महाराणा : निश्चय ही इन वीरों की जन्मभूमि के प्रति आदरभाव सराहनीय

संभाषणीय

महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक संबंधी कहानी पढ़िए और उसके साहस की विशेषता बताइए ।

है । यह मैं जानता हूँ कि इन लोगों के प्राणों की रक्षा करने का कोई उपाय नहीं है । इतने बहुमूल्य प्राण लेकर भी मुझे प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ेगी । धन्य हैं ऐसे वीर ! धन्य हैं वह माँ जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया । धन्य है वह भूमि ! जहाँ पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं ।

(जोर का धमाका और प्रकाश होता है)

महाराणा : अरे देखो अभयसिंह, गोले के वार से वीरसिंह के प्राण पखेरू उड़ गए । बूँदी के मतवाले सिपाही सदा के लिए सो गए । जाओ दुर्ग पर मेवाड़ की पताका फहराओ और वीरसिंह के शव को आदर के साथ यहाँ ले आओ । **(अभयसिंह का प्रस्थान)**

महाराणा : आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है । व्यर्थ के दंभ ने आज कितने ही निर्दोष प्राणों की बलि ले ली ।

(चारणी का प्रवेश)

चारणी : महाराणा, अब तो आपकी आत्मा को शांति मिल गई होगी । अब तो आपने सिर के कलंक का टीका धो लिया । यह देखिए बूँदी के दुर्ग पर मेवाड़ के सेनापति विजय पताका फहरा रहे हैं।

महाराणा : चारणी, क्यों पश्चाताप से विकल प्राणों को तुम और दुखी करती हो ? वीरसिंह की वीरता ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए हैं, मेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया है।

चारणी : तो क्या महाराणा, अब भी मेवाड़ और बूँदी के हृदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं निकल सकता ?

(वीरसिंह के शव के साथ अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : **(शव के पास बैठते हुए)** चारणी, इस शहीद के चरणों के पास बैठकर मैं अपने अपराध के लिए क्षमा माँगता हूँ किंतु क्या बूँदी के राव तथा हाड़ा वंश का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा ?

(राव हेमू का प्रवेश)

राव हेमू : क्यों नही महाराणा ! हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे । आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा ! सब देश, जाति और वंश की मानरक्षा के लिए प्राण देने वाले सैनिक हैं । हम सबके हृदय में एक ज्वाला जल रही है। हम कैसे एक दूसरे से पृथक हो सकते हैं? वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है ।

महाराणा : निश्चय ही महाराज ! हम संपूर्ण राजपूत जाति की ओर से इस अमर आत्मा के आगे अपना मस्तक झुकाएँ । **(सब बैठकर वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं ।)**

(पटाक्षेप)

—०—

सेना में भर्ती होने के लिए आवश्यक जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कीजिए ।

शब्द संसार

नाज (पुं.फा.) = स्वाभिमान
चारण (पुं.सं.) = भाट, कीर्तिगायन करने वाला
उन्नत (वि.सं.) = ऊँचा
विद्वेष (पुं.सं.) = द्वेष (ईर्ष्या)
प्रबंध (पुं.सं.) = व्यवस्था, इंतजाम
विकल (वि.सं.) = व्याकुल, अपूर्ण
पृथक (वि.सं.) = अलग, भिन्न

मुहावरे

मिट्टी में मिला देना = नष्ट करना
प्राणों की बलि देना = प्राण अर्पण करना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) सही विकल्प ढूँढ़कर वाक्य पूर्ण कीजिए :

१. प्रत्येक राजपूत को .....
   (अ) अपनी बुद्धि पर नाज है ।
   (ब) अपने शौर्य पर नाज है ।
   (स) अपनी ताकत पर नाज है ।
२. : इस दुर्ग में कोई तो हमारा .....
   (अ) रोकने वाला चाहिए ।
   (ब) प्रतिरोध करने वाला चाहिए ।
   (स) प्रतिरोध न करने वाला चाहिए ।
३. वीरसिंह और उसके मुट्ठी भर साथी अभी तक.....
   (अ) साहस के साथ लड़ रहे हैं ।
   (ब) वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं ।
   (स) निडरता के साथ लड़ रहे हैं ।

(ख) उत्तर लिखिए :

१. महाराणा की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए चारणी द्वारा सुझाया गया उपाय ।
२. नकली बूँदी को लेकर वीरसिंह के साथियों के विचार ।
३. अपनी मातृभूमि को लेकर वीरसिंह के विचार ।

(२) इस पाठ का केंद्रीय भाव लिखिए ।

स्वमत 'आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है' महाराणा के इस कथन पर अपने विचार लिखिए ।

पाठ से आगे 'साहस को अधीन करने की अभिलाषा करना पागलपन है', कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

.....
.....
.....

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में से सर्वनाम एवं क्रिया छाँटकर भेदों सहित लिखिए तथा अन्य पाँच–पाँच सर्वनाम एवं क्रियाएँ खोजकर नए वाक्य बनाइए :–

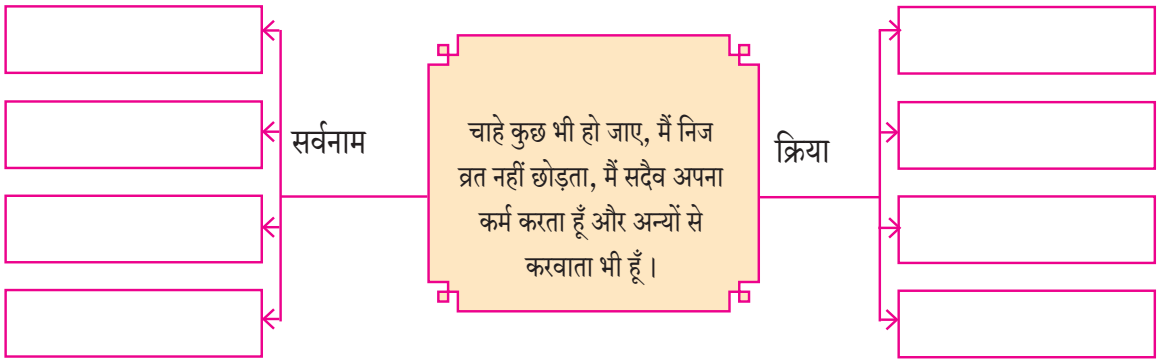

(२) निम्न में से संज्ञा तथा विशेषण पहचानकर भेदों सहित लिखिए तथा अन्य पाँच–पाँच संज्ञा, विशेषण खोजकर नए वाक्य बनाइए :–

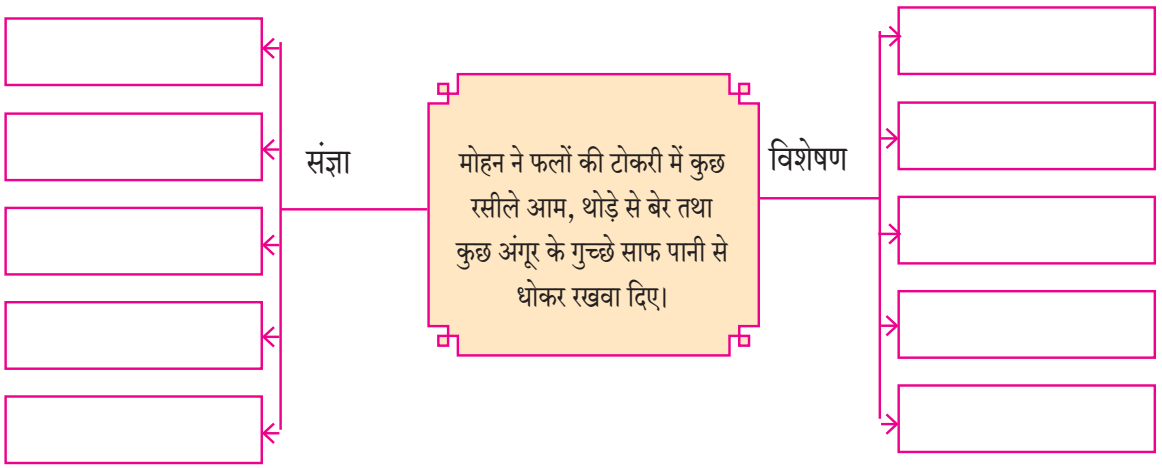

(३) पाठ्यपुस्तक की पहली इकाई के १ से ६ पाठों से भेदों सहित संज्ञाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(४) पाठ्यपुस्तक की पहली इकाई के ७ से १३ के पाठों से भेदों सहित सर्वनामों को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(५) पाठ्यपुस्तक की दूसरी इकाई के १ से ६ के पाठों से भेदों सहित विशेषणों को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(६) पाठ्यपुस्तक की दूसरी इकाई के ७ से १३ के पाठों से भेदों सहित क्रियाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।